अध्याय
15

स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

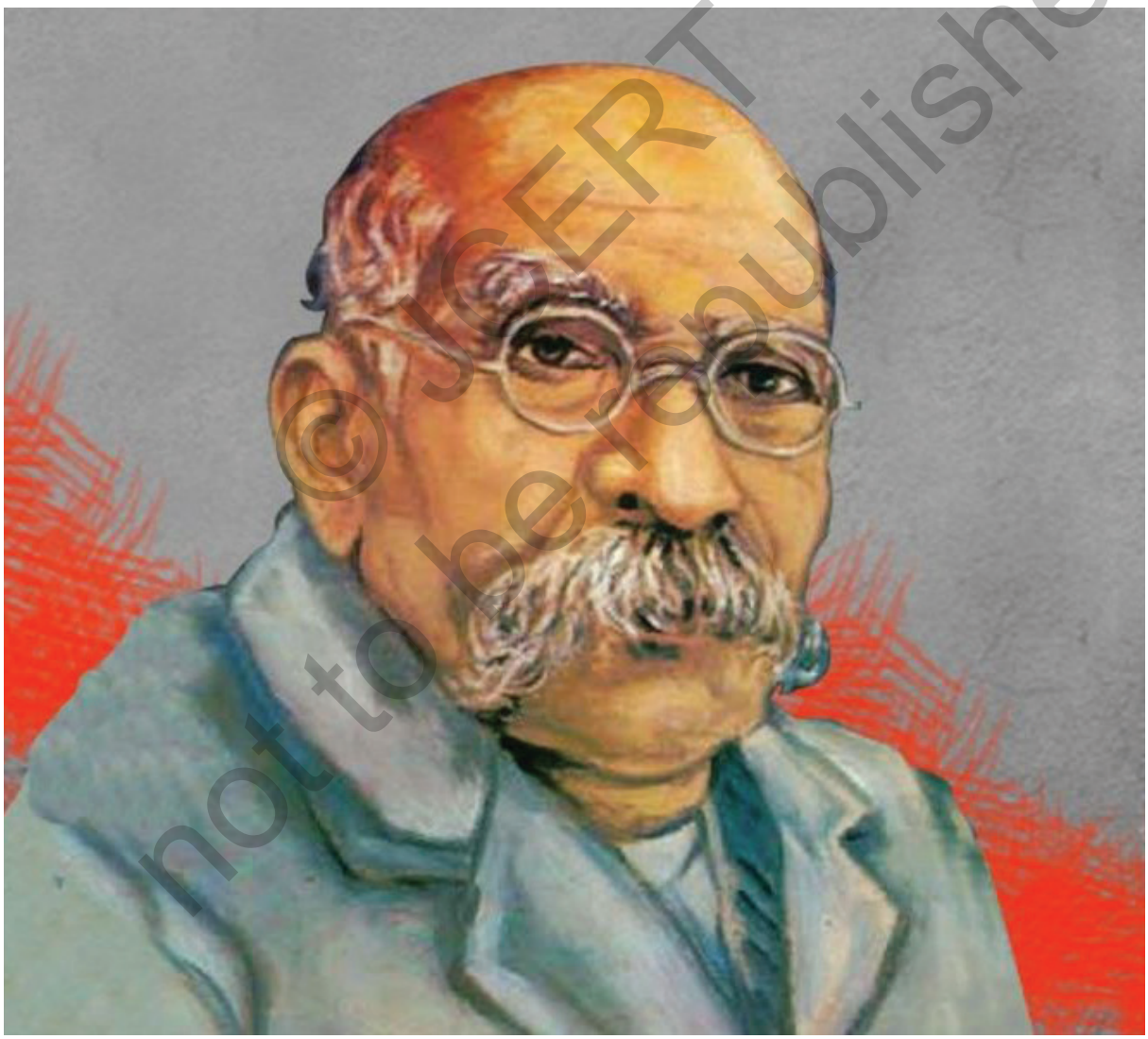

महावीर प्रसाद द्विवेदी

© JCERT not to be republished

जीवन परिचय

जन्म – 15 मई 1864

स्थान – रायबरेली दौलतपुर (उत्तर प्रदेश)

निधन – 21 दिसंबर 1938

पिता – रामसहाय दुबे

1903 से 1920 तक प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का संपादन

रचनाएं –

निबंध संग्रह – रसग्य रंजन ,साहित्यसीकर,साहित्य सन्दर्भ अद्भुत आलाप,

'संपत्ति शास्त्र ' अर्थशास्त्र से संबंधित

'महिला मोद' और

'आध्यात्मिकी ' दर्शन की पुस्तक है

'द्विवेदी काव्य माला ' में उनकी कविताएं हैं

उनका संपूर्ण साहित्य महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रश्नावली के नाम से 15 खंडों में प्रकाशित है।

साहित्यिक परिचय

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था थे जिन से परिचित होना हिंदी साहित्य के गौरवशाली अध्याय से परिचित होना है। वे हिंदी के पहले व्यवस्थित संपादक, भाषा वैज्ञानिक इतिहासकार, पुरातत्वेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री वैज्ञानिक चिंतन एवं लेखन के संस्थापक, समालोचक और अनुवादक भी थे।
2. अपने युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा और दृष्टि प्रदान की। उनके इस अतुलनीय योगदान के कारण आधुनिक हिंदी साहित्य का दूसरा युग 'द्विवेदी युग' (1900—1920) के नाम से जाना जाता है।
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिंदी गद्द की भाषा का परिष्कार किया और लेखकों की सुविधा के लिए व्याकरण और वर्तनी के नियम निश्चित किए।
3. कविता की भाषा के रूप में ब्रज भाषा के बदले खड़ी बोली को प्रतिष्ठित किया।
4. युग निर्माता महावीर प्रसाद द्विवेदी ने स्वाधीनता की चेतना विकसित करने के लिए स्वदेशी चिंतन को व्यापक बताया है।
5. उन्होंने 'सरस्वती' के माध्यम से पत्रकारिता के श्रेष्ठ स्वरूप को सामने रखा।
6. विद्वता एवं भव्यता के साथ सरसता उनके लेखन की विशेषता है।
7. उनके लेखन में व्यंग्य की छटा देखते ही बनती है।

पाठ परिचय

1. आज हमारे समाज में लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं है किंतु

© JCERT not to be republished

यहां तक पहुंचने के लिए अनेक स्त्री पुरुषों ने लंबा संघर्ष किया है।

2. नवजागरण काल में मात्र स्त्री शिक्षा ही नहीं बल्कि समाज में जनतांत्रिक एवं वैज्ञानिक चेतना के संपूर्ण विकास के लिए अलख जगाया है।
3. द्विवेदी जी के लेख उन सभी पुरातन पंथी विचारों से लोहा लेता है जो स्त्री शिक्षा को व्यर्थ अथवा समाज के विघटन का कारण मानते थे।
4. इसमें परंपरा को ज्यों का त्यों नहीं स्वीकारा है बल्कि विवेक से फैसला लेकर ग्रहण करने योग्य को लेने की बात की गई है और जो हिस्सा सड़-गल चुका है उसे छोड़ दिया गया है।
5. यह विवेक पूर्ण दृष्टि संपूर्ण नवजागरण काल की विशेषता है।
6. आज इस निबंध का अनेक दृष्टि से ऐतिहासिक महत्व है। यह लेख पहली बार सितंबर 1914 की 'सरस्वती' में 'पढ़े-लिखो का पांडित्य' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। बाद में द्विवेदी जी ने ' महिला मोद' पुस्तक में शामिल करते समय इसका शीर्षक 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' रख दिया था।

पाठ सार

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने स्त्री शिक्षा के महत्व को प्रसारित करते हुए उन विचारों का खंडन किया है जो स्त्रियों का पढ़ना -लिखना गृह -सुख के नाश का कारण समझते हैं। शिक्षा के विरोध में ये लोग कुछ तर्क प्रस्तुत करते हैं-

उनके अनुसार प्राचीन भारत में संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियां गंवार भाषा का प्रयोग करती थी।शकुंतला का उदाहरण एक गंवार के रूप में दिया गया है। जिस भाषा में शकुंतला ने श्लोक कही वह गंवारों की भाषा थी। शकुंतला ने जो कड़वी वाक्य दुष्यंत को कहें वह इस पढ़ाई का ही नतीजा था। इन सब बातों का खंडन करते हुए लेखक कहते हैं कि क्या कोई सुशिक्षित नारी प्राकृत भाषा में बात नहीं कर सकती? बुद्ध से लेकर महावीर तक ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए हैं; तो क्या यह सब गंवार थे? लेखक आगे कहते हैं। हिंदी, बांग्ला, मराठी भाषाएं आज की प्राकृतिक भाषाएं हैं। जिस तरह आज हिंदी, बांग्ला या कोई भी भाषा में पढ़ कर शिक्षित हो सकते हैं उसी तरह उस जमाने में यह अधिकार प्राकृत भाषा को था। इस तरह प्राकृत बोलने वाले को अनपढ़ नहीं कहा जा सकता।

जिस समय नाट्य शास्त्रियों ने नाट्य संबंधी नियम बनाये थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत नहीं थी। इसलिए नाटयशास्त्रियों ने अपनी भाषा संस्कृत और सर्वसाधारण एवं स्त्रियों की भाषा प्राकृत कर दिया। लेखक तर्क देते हुए आगे कहते हैं कि शास्त्रों में बड़े-बड़े विद्वानों की चर्चा मिलती है किंतु उनके सीखने संबंधी उनकी पुस्तक या पांडुलिपि नहीं मिलती।

उसी तरह प्राचीन समय में नारी विद्यालय की चर्चा नहीं मिलती। इसका अर्थ यह नहीं

© JCERT not to be republished

लगा सकते के सभी स्त्रियां गंवार थी। लेखक प्राचीन काल की अनेक सुशिक्षित स्त्रियां जैसे शीला, विज्जा के उदाहरण देते हुए उनके सुशिक्षित होने का प्रमाण देते हैं वे कहते हैं कि प्राचीन काल में अनेक शिक्षित स्त्रियों को नाच -गान, फुल चुनने और हार बनाने की आजादी थी तो फिर कैसे कहा जा सकता है कि उनको शिक्षा नहीं दी जाती थी अंत में कहते हैं मान लीजिए प्राचीन काल में एक भी स्त्रियां शिक्षित नहीं थी, उन्हें पढ़ाने की आवश्यकता नहीं समझी गई होगी; किंतु आज के समय में उनका शिक्षित होना परम आवश्यक है।

लेखक पिछड़े विचारधारा वालों से कहते हैं कि उन्हें पुरानी मान्यताओं में बदलाव लाना चाहिए। जो लोग स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए पुराणों का हवाला मानते हैं उन्हें 'श्रीमद् भागवत' और और 'दशम स्कंध' के उत्तरार्ध का 53 वां अध्याय पढ़ना चाहिए जिसमें रुक्मणी की कथा है। उसमें रुकमणी ने एक लंबा चौड़ा पत्र लिखकर श्रीकृष्ण को भेजा था जो प्राकृत में नहीं था। उन्होंने सीता, शकुंतला आदि के प्रसंगों का भी उल्लेख किया।

लेखक कहते हैं लिखने में स्वयं कोई ऐसी बात जिससे अनर्थ हो सके। समाज में ऐसे लोग दंडनीय हैं जो स्त्री के विरोधी हैं। शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है। पढ़ना उसी के अंतर्गत आता है। आज समय की मांग है कि पिछडे बातों से निकलकर सब को शिक्षित करने का प्रयास करें।

इस निबंध में द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के महत्व को प्रसारित करते हुए उन विचारों का खंडन किया है जो पढ़े-लिखे होकर भी स्त्री शिक्षा को घर और समाज दोनों के लिए हानि कारक मानते थे।

शब्दार्थ-

विद्यमान -	उपस्थित
कुमार्गगामी -	बुरे मार्ग पर चलने वाले
सुमार्गी -	अच्छी राह पर चलने वाले
अधार्मिक -	धर्म से संबंधन न रखने वाला
धर्मतत्व -	धर्म का सार , दलीलें - तर्क
प्राकृत -	एक प्राचीन भाषा
वेदांत वाहिनी -	वेदांत दर्शन पर बोलने वाली
अपढ -	अनपढ,
दर्शक ग्रंथ -	जानकारी देने वाली पुस्तकें तत्कालीन - उस समय का
तर्कशास्त्रज्ञता -	तर्कशास्त्र को जानना
न्याय शीलता -	न्याय के अनुसारआचरण करना
कुतर्क -	अनुचित तर्क,
खंडन -	दूसरे के मत का युक्ति पूर्वक निराकरण

© JCERT not to be republished

प्रगल्भ -	प्रतिभावान
नामोल्लेख -	नाम का उल्लेख करना
आदृत -	आदर या सम्मान पाया, सम्मानित
विज्ञ -	समझदार,विद्वान
ब्रह्मवादी -	वेद पढ़ने पढ़ाने वाला
दुराचार -	निंदनीय आचरण
शहधर्मचारिनी -	पत्नी,
कालकूट -	जहर
पीयूष -	अमृत,
अल्पज्ञ -	थोड़ा जानने वाला
प्राक्कालीन -	पुरानी,
व्यभिचार -	पाप
विक्षिप्त -	पागल,
बात व्यथित -	बातों से दुखी होने वाले
ग्रह ग्रस्त -	पाप ग्रह से प्रभावित,
किंचित -	थोड़ा
दूर्वाक्य -	निंदा करने वाला वाक्य या बात
परित्यक्त -	पूरे तौर पर छोड़ा हुआ
मिथ्या वाद -	झूठी बात,
अलंकारोपण -	दोष मढ़ना /दोषी ठहराना,
अभिज्ञता -	जानकारी का अभाव
निर्भत्सना -	तिरस्कार , निंदा

प्रश्न –अभ्यास

प्रश्न 1. कुछ पुरातनपंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदीजी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया?

उत्तर- द्विवेदीजी ने निम्नलिखित तर्क देकर पुरातनपंथियों के तर्कों का विरोध कर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया -

1. द्विवेदीजी ने कहा है कि संस्कृत के नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। उस काल में कुछ ही लोग संस्कृत बोल पाते थे। शेष शिक्षित और अशिक्षित प्राकृत ही बोलते थे, क्योंकि प्राकृत उस काल की बोलचाल की भाषा थी। यदि वह प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रन्थ प्राकृत में ही क्यों लिखें जाते? इसलिए प्राकृत भाषा बोलना अनपढ होने का प्रमाण नहीं कहा जा सकता।

2. **यद्यपि प्राचीन काल में स्त्री-शिक्षा थी, लेकिन उसके होने के आज पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। गार्गी, मंडन मिश्र की पत्नी, सीता, शकुन्तला आदि उदाहरण हमारे सामने हैं, जिससे पुष्टि होती है कि ये सभी पढ़ी-लिखी थीं।**

© JCERT not to be republished

3. **पुराने जमाने में स्त्रियों ने वेद-मन्त्रों की रचना की, और पद्य-रचनाएँ भी की जो उनके शिक्षित होने के प्रमाणों की ही पुष्टि है।**
4. **हो सकता है कि पुराने जमाने में स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता न समझी गयी हो, पर अब तो है। हमने कई नियमों को तोड़ा है। अतः इसे भी तोड़ देना चाहिए।**
5. **वर्तमान शिक्षा प्रणाली दूषित है, साथ ही स्त्री-शिक्षा में सुधार एवं संशोधन की गुंजाइश है, तो भी उसे अनर्थकारी नहीं कहा जा सकता है।**

प्रश्न 2. 'स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदीजी ने कैसे किया? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- द्विवेदीजी ने कतर्कवादियों की स्त्री-शिक्षा विरोधी दलीलों का जोरदार खण्डन करते हुए कहा है कि यदि स्त्रियों को पढ़ाने में अनर्थ होता है तो पुरुषों को भी पढ़ाने में अनर्थ होते होंगे। यदि पढ़ाई को अनर्थ का कारण मान लिया जाए तो सुशिक्षित पुरुषों द्वारा दिए जाने वाले सारे अनर्थ भी पढ़ाई के दुष्परिणाम माने जाने चाहिए। अतः उनके भी स्कूल-कॉलेज बन्द कर दिए जाने चाहिए।

स्त्रियों को पढ़ाने में अनर्थ होता है, इस सम्बन्ध में द्विवेदीजी ने तर्क देते हुए कहा है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त को..... कटु वचन नहीं कहे। उसके वे कटुवचन उसकी शिक्षा के परिणाम नहीं थे, बल्कि उसका स्वाभाविक क्रोध था। इसी। प्रकार सीता का कथन राम के प्रति उनका स्वाभाविक क्रोध था। इसके साथ ही उन्होंने व्यंग्यपूर्ण तर्क देते हुए कहा है कि स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का छूट। ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अनपढ़ रखकर भारत का गौरव बढ़ाना चाहते हैं।

प्रश्न 3. द्विवेदीजी ने स्त्री-शिक्षा विरोधी कुतर्कों का खण्डन करने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है, जैसे 'यह सब पापी पढ़ने का अपराध है। न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं।' आप ऐसे अन्य अंशों को निबन्ध में से छाँटकर समझिए और लिखिए।

उत्तर- इस निबन्ध में निम्नलिखित अंश इसी तरह के हैं -

1. जिन पण्डितों ने गाथा-सप्तशती, सेतुबंध-महाकाव्य और कुमारपालचरित आदि ग्रन्थ प्राकृत में बनाए हैं, वे यदि अपढ़ और गँवार थे तो हिन्दी के प्रसिद्ध से प्रसिद्ध अखबार का सम्पादक इस जमाने में अपढ़ और गँवार कहा जा सकता है। क्योंकि वह अपने जमाने की प्रचलित भाषा में अखबार लिखता है।
2. पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा की गयी यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार करते हैं, परन्तु पुराने ग्रन्थों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मुर्ख, अनपढ और गँवार बताते हैं। इस तर्कशास्त्रज्ञाता

© JCERT not to be republished

और इस न्यायशीलता की बलिहारी। वेदों को प्रायः सभी हिन्दू ईश्वर-कृत मानते हैं। सो ईश्वर तो वेद-मन्त्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से करावें और हम उन्हें ककहरा पढ़ाना भी पाप समझें।

3. स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घुट। ऐसी ही दलीलों और दृष्टान्तों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं।

4. परन्तु विक्षिप्तों, बातव्यथितों और ग्रहग्रस्तों के सिवा ऐसी दलीलें पेश करने वाले बहुत ही कम मिलेंगे। शकुन्तला ने दुष्यन्त को कटुवाक्य कहकर कौन-सी अस्वाभाविकता दिखाई? क्या वह यह कहती कि "आर्य पुत्र, शाबाश! बड़ा अच्छा काम किया जो मेरे साथ गान्धर्व-विवाह करके मुकर गए। नीति, पाप, सदाचार और धर्म की आप प्रत्यक्ष मूर्ति

प्रश्न 4. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अनपढ़ होने का सबूत है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं है, क्योंकि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी। उस समय अनेक ग्रन्थ प्राकृत भाषा में ही रचे गये। भगवान शाक्यमुनि और उनके शिष्य प्राकृत भाषा में ही धर्मोपदेश देते थे। बौद्धों और जैनों के धर्म-ग्रन्थ भी प्राकृत भाषा में ही रचे गये। उस समय संस्कृत कुछ गिने-चुने ही लोग बोलते थे, सर्वसाधारण जनों एवं स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का ही नियम था।

प्रश्न 5. परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाते हों तर्क-सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- द्विवेदीजी का यह कथन सत्य है। हमारी परम्परा बहुत लम्बी है और उससे कई बातें ऐसी चली आ रही हैं जिनका आज की स्थिति में महत्त्व नगण्य है। इसलिए हमें ऐसी परम्पराओं को त्याग देना चाहिए और उन्हीं परम्पराओं को स्वीकार करना चाहिए जो स्त्री-पुरुष की समानता को महत्त्व देती हों। उनमें समानता का प्रसार करती हों। तभी हम और हमारा समाज उन्नति करेगा।

प्रश्न 6. तब की शिक्षा प्रणाली और अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अन्तर है? स्पष्ट करें।

अथवा

लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्राचीन एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्या अन्तर बताया है?

अथवा

प्राचीन और नवीन शिक्षा प्रणाली में अन्तर को समझाइये।

उत्तर- प्राचीन समय में शिक्षा प्रणाली में शिक्षा गुरुओं के आश्रमों में दी जाती थी और अध्ययन सामग्री के रटने पर बल दिया जाता था। इसलिए स्त्रियाँ शिक्षा से वंचित रह जाती थीं, क्योंकि वे आश्रमों और मन्दिरों में नहीं जा पाती थीं। आज की शिक्षा प्रणाली में नर-

© JCERT not to be republished

नारी का भेद नहीं किया जाता है। समानता के आधार पर शिक्षा व्यवस्था की प्रणाली लागू है। इसीलिए आज सह-शिक्षा का प्रचलन है।

रचना और अभिव्यक्ति –

प्रश्न 7. महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है, कैसे?

उत्तर- द्विवेदीजी का दृष्टिकोण समाज-सुधार से पूरित था। उनके काल में स्त्रियों की शिक्षा पर जरा भी ध्यान नहीं दिया जाता था, उन्हें घर-गृहस्थी के कामों में ही सीमित रखा जाता था। पुरुष वर्ग का अपना ही महत्त्व था इसलिए वह स्त्रियों पर मनमाने अत्याचार करता था। द्विवेदीजी इन अत्याचारों के विरोधी थे। इसलिए उन्होंने स्त्री-शिक्षा की वकालत की।

यह उनकी दूरगामी सोच का ही परिचय था। इसलिए उन्होंने स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा दिया और पुरातनपंथियों की एक-एक बात को सशक्त तर्क से काटा। वे चाहते थे कि भविष्य में स्त्री शिक्षा का युग शुरू हो, उसी का यह परिणाम है कि लोग स्त्री-शिक्षा के महत्त्व को समझने लगे और आज भी स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त कर ऊँचे-ऊँचे पदों पर पुरुष की बराबरी करती हुई प्रतिष्ठित होने लगी हैं। इतना ही नहीं, वे शिक्षा के हर क्षेत्र में पुरुषों पर हावीप्रश्न

प्रश्न 8. द्विवेदीजी की भाषा-शैली पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर: द्विवेदीजी का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था हिन्दी भाषा का संस्कार और परिष्कार। इसलिए उन्होंने हिन्दी भाषा को व्याकरण-सम्मत बनाने, उसके रूप को निखारने, सँवारने, उसके शब्द-भण्डार को बढ़ाने और उसको सशक्त, करने का प्रशंसनीय कार्य किया। इसलिए उन्हें खडी बोली का जनक भी कहा जा सकता है। आपने गद्य के लिए नहीं बल्कि कविता के लिए खड़ी बोली को प्रोत्साहित किया। और, अन्य गद्य-लेखकों की त्रुटियों को भी इंगित किया। इसी प्रकार आपकी शैली के विविध रूप आपकी रचनाओं में प्राप्त होते हैं। आपने अपनी रचनाओं में परिचयात्मक, आलोचनात्मक, विवेचनात्मक, समास, व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैलियों का प्रयोग किया है।

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा क्या है?

उत्तर- बौद्ध धर्म के त्रिपिटक ग्रंथ की भाषा प्राकृत है

प्रश्न 2. रुक्मिणी हरण की कथा कहाँ मिलती है?

उत्तर- 'रुक्मिणी हरण' की कथा श्रीमद्भागवत पुराण के दशम स्कन्ध में मिलती है।

प्रश्न 3. पाठ में आये प्राचीन कालीन विदुषी महिलाओं के नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ में आई विदुषी महिलाओं के नाम हैं- शीला, विज्जा, अनुसूया, गार्गी इत्यादि।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 4. शकुंतला ने दुष्यंत के विषय में दुर्वाक्य क्यों कहे?

उत्तर- शकुंतला के साथ राजा दुष्यंत ने गांधर्व विवाह किया था किंतु बाद में उसको पहचानने से भी मना कर दिया था। इससे कुपित और अपमानित होकर शकुंतला ने उनसे दुर्वचन कहे थे।

प्रश्न 5. नाट्यशास्त्र सम्बन्धी नियमों में स्त्री-पात्रों के लिए कौन-सी भाषा निर्धारित की गई है?

उत्तर- नाट्यशास्त्र सम्बन्धी नियमों में स्त्री-पात्रों के लिए प्राकृत भाषा निर्धारित की गई है।

प्रश्न 6. "नाटकों में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है"। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र के नियम बनाये थे, उस समय सभी लोग संस्कृत का प्रयोग नहीं करते थे। अधिकांश लोग प्राकृत बोलते थे और वही जनभाषा थी।

अतः उन्होंने स्त्रियों के संवाद संस्कृत में नहीं रखने का नियम बनाया। पुरुषों के संवाद संस्कृत में रखे जाते थे।

प्रश्न 7. "यह सारा दुराचार स्त्रियों के पढ़ाने का ही कुफल है" – पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- गार्गी ने बड़े–बड़े ब्रह्मवादियों के शास्त्रार्थ में छक्के छुड़ा दिए थे। पंडित मंडन मिश्र की पत्नी ने शंकराचार्य को निरुत्तर कर दिया था। यदि वे पढ़ी–लिखी न होतीं तो विद्वान पुरुषों से तर्क–वितर्क नहीं कर सकती थीं। उपर्युक्त वाक्य में इन विदुषी–नारियों की प्रशंसा की गई है। ऐसी महिलाओं की शास्त्रार्थ करने की कुशलता को पढ़ाई के कारण होने वाला 'दुराचार' बताने वालों की मूर्खता पर कठोर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न 3. द्विवेदी जी ने स्त्री शिक्षा के समर्थन में कौन–कौन से तर्क दिए हैं,

उत्तर- द्विवेदी जी ने कहा कि स्त्री–शिक्षा देश और समाज की प्रगति में सहायक है। शिक्षा से कोई अनर्थ नहीं होता। यदि शकुंतला ने दुष्यंत तथा सीता ने राम के व्यवहार की निन्दा की थी तो उसका कारण उनकी पढ़ाई नहीं थी। शिक्षा से यदि अनर्थ होता है तो वह पुरुषों की शिक्षा से भी होगा। यदि प्राचीन काल में स्त्री–शिक्षा नहीं थी तो इस कारण वर्तमान में स्त्री–शिक्षा का विरोध करना उचित नहीं है।

प्रश्न 4. "स्त्री शिक्षा समाज के पतन का कारण नहीं वरन् समाज के विकास की सीढ़ी है– इस कथन के आलोक में स्त्री–शिक्षा पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर- समाज में केवल पुरुष ही नहीं होते, स्त्रियाँ भी होती हैं। यदि समाज को आगे बढ़ाना है तो उसको स्त्रियों को साथ लेकर चलना होगा। चूँकि समाज में स्त्रियाँ संख्या में आधी होती हैं। अतः उनको शिक्षा न देना, आधे समाज को पिछड़ा बनाये रखना है।

© JCERT not to be republished

समाज के उत्थान के लिए उसके सदस्यों को अच्छी और ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उसको आगे बढ़ा सके।

शिक्षा की समुचित व्यवस्था के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता। यह शिक्षा पुरुषों के साथ स्त्रियों को भी दी जानी चाहिए। सम्पूर्ण समाह तभी प्रगति करेगा जब स्त्रियाँ शिक्षित होंगी। स्त्रियों को विभिन्न कार्यक्षेत्रों में कुशल बनाने के लिए उनको उचित शिक्षा दी जानी चाहिए।

शिक्षा स्त्रियों को भी पुरुषों के समान विच. ारशील और समझदार बनाती है। वे कुशल प्रशासक, वैज्ञानिक, कलाकार आदि बनती हैं। परिवार, समाज तथा देश को उनकी शिक्षा से लाभ होता है। स्त्री–शिक्षण से समाज का पतन होने की बात सोचना विवे. कहीनता ही मानी जाएगी। स्त्री–शिक्षा के अभाव में पूर्ण सामाजिक विकास की कल्. पना करना भी बेमानी है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया

(क) माधुरी (ख) जागरण

(ग) कविवचन सुधा (घ) सरस्वती

उत्तर-(d) सरस्वती

प्रश्न 2. शकुन्तला ने किस भाषा में श्लोक कहा

(क) अपभ्रंश (ख) प्राकृत

(ग) शौरसेनी (घ) पाली

उत्तर-(b) प्राकृत

प्रश्न 3. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 से 1920 तक किस पत्रिका का सम्पादन किया था?

(a) सरस्वती (b) इन्दु

(c) चाँद (d) जागरण

उत्तर-(a) सरस्वती

प्रश्न 4. 'रसज्ञ रंजन' के रचयिता का नाम है।

(a) भारतुन्दु हरिशचन्द्र

(b) प्रताप नारायण मिश्र

(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(d) बद्रीनारायण प्रेमचन्द

उत्तर-(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न 5. 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' शीर्षक निबंध द्विवेदी जी के किस निबंध संग्रह से लिया गया है?

(a) रसज्ञरंजन (b) महिला मोद

(c) अद्‌भुत आलाप (d) साहित्यसीकर

उत्तर-(d) साहित्यसीकर

प्रश्न 6. 'स्त्री–शिक्षा' के विरोधी कुतर्कों का खंडन' शीर्षक निबन्ध 'सरस्वती' में सन् 1914 में किस नाम से प्रकाशित हुआ था?

© JCERT not to be republished

(a) स्त्री शिक्षा के दोष

(b) स्त्री–शिक्षा का अनुचित विरोध

(c) पढ़े–लिखों का पांडित्य

(d) स्त्री–शिक्षा का विरोध और सामाजिक अहित

उत्तर-(c) पढ़े–लिखों का पांडित्य

प्रश्न 7. गाँवारों की भाषा कहा गया है।

(a) संस्कृत को (b) प्राकृत को

(c) अपभ्रंश को (d) शौरसेनी को

उत्तर-(b) प्राकृत को

प्रश्न 8. शकुंतला ने दुर्वाक्य कहे थे।

(a) दुष्यन्त से (b) कण्व से

(c) अनुसूया से (d) प्रियंवदा से

उत्तर-(a) दुष्यन्त से

प्रश्न 9. सीता को वन में छोड़ने गए थे।

(a) राम (b) लक्ष्मण

(c) हनुमान (d) भरत

उत्तर-(b) लक्ष्मण

प्रश्न 10. शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में निरुत्तर करने वाली विदुषी थी।

(a) गार्गी

(b) अनुसूया

(c) कमंडन मिश्र की पत्नी

(d) विज्जा

उत्तर-(c) मंडन मिश्र की पत्नपी

प्रश्न 11. रुक्मिणी ने संदेश भेजा था

(a) श्रीकृष्ण को (b) बलभद्र को

(c) यशोदा को (d) देवता को

उत्तर-(a) श्रीकृष्ण को

© JCERT not to be republished